ज्ञान ऊर्जा

मोहित डोभाल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Mohit Dobhal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-459-8

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: June 2026

भारत माता को प्रणाम।

माताश्री मनोरमा डोभाल को प्रणाम।

पिताश्री स्वर्गीय प्रकाश चंद डोभाल को प्रणाम।

आप सभी में बस रही उस ऊर्जा को प्रणाम।

भूमिका

आदि काल से चली आ रही भारतीय ज्ञान परंपरा में निश्चित ही परम ऊर्जा समाहित है।

" सत्यं ज्ञानम् अनंतं ब्रम्ह "

- तैत्तरीय उपनिषद् , अध्याय २ , अनुवाक १।

चाहे ब्रम्ह ज्ञान हो, विज्ञान हो या किसी स्थिति का संज्ञान हो, ज्ञान सदैव आवश्यक है।

सत्य तो ये है की ज्ञान किसी एक का है ही नहीं। यह तो प्रकृति में व्याप्त एक सत्य है जो हम सब जीवों को स्पर्श करता है। कभी कभी ये हमें अपना माध्यम बना लेता है।

एक संगीतज्ञ होने के कारण, गुरुजनों के आशीर्वादानुसार कभी-कभी मुझसे बहुत सुन्दर स्वर एवं पद रचनाएं बन जाती हैं। परन्तु इन्हे मैं नहीं बनाता, ये मेरे द्वारा बनती हैं। ये ज्ञान चाहे स्वरों का हो या पदों का, बस स्वतः मुझे माध्यम बनने का अवसर मिल ही जाता है, जिसके लिए मैं प्रभु का कृतज्ञ हूँ ।

यह पुस्तक जिसका शीर्षक - 'ज्ञान ऊर्जा' है, इसका औचित्य कोई बहुत अनोखी व असाधारण पुस्तक होना नहीं है। अपितु इसका उद्देश्य मेरे अंदर की ऊर्जा को आदर देना है। साथ ही आपके अंदर की ऊर्जा को प्रणाम करना है।

पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने से प्रतीत होता है की यह प्राकृतिक रचनात्मक ऊर्जा मुझे अपना माध्यम बनाकर कुछ न कुछ करवाती रहती है। इस ज्ञान ऊर्जा का तिरस्कार न हो, इसलिए इस पुस्तक को प्रकाशित करने का विचार आया। भारत एवं विदेशों में सांगीतिक कार्यक्रमों के लिए भ्रमण के समय कुछ कवितायें लिखीं, कुछ चिंतन किया, कुछ टकराव हुए,

सांगीतिक तप और जीवन के पथ पर विचार किया। ये विचार बहुत गहरे थे परन्तु द्रुत गति से लोप भी हो जाते थे। उनमें से कुछ को इस लघु पुस्तक में प्रकाशित किया गया है।

यदि आप यह पुस्तक पढ़ रहे हैं तो जान लें की मैं आपको केवल एक पाठक की भाँती नहीं समझता। अपितु मैं आपको भी उस परम ऊर्जा का एक अंग समझता हूँ। यदि आप इस पुस्तक के किसी भी अंश से स्वयं को जोड़ पाए तो मुझे अवश्य बताएं। यह जानकार मुझे बहुत आनंद एवं प्रोत्साहन मिलेगा । आप मुझसे इ-मेल अथवा फ़ोन के माध्यम से अपने विचार साझा कर सकते हैं ।

आप चाहें तो इनमें से कुछ कविताओं को इंटरनेट पर सुन भी सकते हैं ।

(Spotify , YouTube , Apple music) जैसे माध्यमों पर - “Gyan Urja - Mohit Dobhal " को search कर सकते हैं।

आभार !

मोहित डोभाल

२० अप्रैल २०२६

दिल्ली।

Email : mohitDofficial@gmail.com
Phone : +91 787827144407

You can listen Mohit's poems & songs on Spotify and all the leading audio platforms. You may also follow Mohit on Instagram for latest updates.

Spotify

Instagram

@DOBHALMOHIT

अनुक्रमणिका

1. स्वयं हो रहा है। 1
2. कलाकार 3
3. ऊर्जा 5
4. काँच की बोतल 8
5. क्यों? 10
6. किरण 12
7. बस अभी 14
8. आवश्यकता 16
9. खाली पेट 18
10. अनुभूति 20
11. माथे का तिलक 22

1. स्वयं हो रहा है।

मुझे पता नहीं कैसे, परंतु स्वयं हो रहा है ।

जिन इच्छाओं की पूर्ति के लिए कार्य करना चाहता हूँ,

वो स्वयं हो रहा है।

मैं कर तो रहा हूँ, पर कोई बहुत अधिक श्रम नहीं है। मैं कर तो रहा हूँ, पर कोई पीड़ा नहीं है,

कोई विवषता नहीं है, कोई विफलता भी नहीं है। इच्छाओं की पूर्ति के लिए कार्य पूर्ण हो रहा है,

स्वयं हो रहा है।

ये इच्छाएँ सस्ती नहीं हैं, परंतु इतनी अनमोल भी नहीं कि न की जा सकें।

ये इच्छाएँ अपनी पूरी कीमत माँग रहीं हैं।

इन्हें प्राप्त करने की इच्छा भगवान से करना,
ऐसा होगा जैसे –घनघोर मीलों वर्ग तक अपनी भुजाएं फैलाये मेघ से,
बस एक मटका पानी माँगने के लिए रोते हुए अपनी आँखों से
दो चम्मच आँसू बहा देना।

कार्य ये शरीर कर तो रहा है, पर स्वयं हो रहा है। , इसे करने में रोना नहीं आता,

कोई द्वेष की भावना या ग्लानि भी नहीं होती।

यह कार्य ऐसे हो रहा है जैसे मेरे लिए ही बना हो।

जैसे बादल को बरसना ही था, जैसे पवन को बहना ही था,

जैसे काँटे को चुभना ही था, जैसे देह को मिटना ही था —

वैसे ही यह कार्य स्वयं होना ही था।

क्यों बहूँ इस कार्य की नदी के विपरीत?

क्यों कुछ सामाजिक धारणाओं के चलते अपने चित्त की अग्नि को बुझाकर ऐसा कार्य करूँ जो दिन-रात

मेरे हर्ष के बादल को सुखाता रहे ?

यदि मेरे मन का बादल बरसना चाहता है, यदि मेरे शरीर की अग्नि प्रज्वलित रहना चाहती है,

यदि मेरा कार्य आलस्य से दूर है

यदि वह समाज को क्षति नहीं पहुँचा रहा, तो क्यों न करूँ, जो स्वयं हो रहा है ?

- मोहित डोभाल

7 फेब्रुअरी 2024

6 PM

2. कलाकार

कौन है कलाकार?
कोई क्यों बनना चाहेगा कलाकार?

कलाकार वो है जिसका धर्म है बहना।
श्रोताओं एवं दर्शकों को जो अपनी कला से
बहा ले जाए, वो है कलाकार।

जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को भूलने पर
मजबूर कर दे, वो है कलाकार।
जो नीरस व्यक्ति को भी रस की गीली चिंगारी
जलाने पर मजबूर कर दे, वो है कलाकार।

जिसकी कला से कोई भूल जाए
कि घर में क्या है, समय क्या है, जीवन क्या है—
उस कला में ऐसा बह जाये
जैसे एक बाढ़ अचानक आकर बहा ले जाती है।

जो व्यक्ति स्वयं भूल जाए कि बहना कैसे है,
कैसा लगता है आनंद मधु में घुल जाना,
भूल जाए कि कैसा लगता है स्वयं पानी हो जाना।

जो व्यक्ति केवल धूप को ही अपना माने,
सूखे को ही जाने, जो प्यासा रह जाए।
जिस व्यक्ति के लिए दो बूँद कलात्मक पानी भी अमृत समान हो,
ऐसे व्यक्ति के लिए कलाकार अपनी कलात्मक रस की नदी से
कुछ मटके पानी देने से नहीं कतराता।

कलाकार तो वह जलधारा है जो ऐसे अनगिनत प्यासों को
कालामृत बाँटता है।

पुण्य का काम है कलाकार होना और मोक्ष प्राप्ति है कला निपुण होना।
परन्तु यह एक ऐसा मोक्ष है जिसे बनाये रखने के लिए आजीवन निस्वार्थ भाव से,
अभ्यास करते रहना पड़ता है।

आसान नहीं है कलाकार होना ।

- मोहित डोभाल

29 अगस्त 2025
9:10 AM

3.ऊर्जा

तुम, मैं , ये सारा संसार, ऊर्जा ही तो हैं !

हवा जो बह रही है, या न भी बहे, तो बस वो है यहाँ
तुम्हारे मेरे बीच में।
केवल होने भर से ही वो अपना धर्म निभा रही है।
उस हवा में सोचने की शक्ति तो नहीं है, पर शक्ति तो है।
शक्ति इतनी की तूफ़ान से पूरा मकान उड़ा दे ।
ये ऊर्जा ही तो है !

वो कहते हैं, न ये कभी बनेगी और न कभी मिटेगी,
बस चल रही है | तुम्हारे मेरे अंदर गुज़र रही है हमसे अगली पीढ़ी में।
सब ऊर्जा ही तो है !

खुद ही बर्फ से पानी बन जाती है, ज़्यादा मस्ती छायी तो भाप।
बस अपनी मर्ज़ी की मालकिन, ये ऊर्जा ही तो है !

कभी ये कम हो जाये, तो पहलवान भी बिस्तर पर,
और अधिक हो जाये तो टनो-टन विमान भी हवा में।
खुद ही खुद को जला रही है, खुद ही धरती तक सूर्य से आ रही है।

हमने तो नहीं बुलाया था, स्वयं ही सुबह कर गयी,

न माँगा था मैंने गर्मी में आम, पेड़ो को हरा कर गयी।

फल क्या है ? ऊर्जा ही तो है !

मैं बोल रहा हूँ, तुम सुन रहे हो। इस ध्वनि रुपी ऊर्जा को तुम्हारे कानो तक पहुंचने में भी ऊर्जा लग रही है।

माता-पिता की ऊर्जा से ही निर्मित हम सब आगे ऊर्जा को खरीदने के लिए ऊर्जा व्यय कर रहे हैं।

जब ये सब खेल ऊर्जा का ही है, तो तुम कैसे सोच सकते हो की ऊर्जा तुम्हे अपनी इच्छा से नहीं चला रही ?

तुम बने बैठे अहंकारी।

न जाना कभी कौन निरंकारी।।

जिसका कोई आदि, न जिसका कोई अंत।
कौन है वो ?

ऊर्जा ही तो है !

जैसे पन्ने पर लिखी कविता, अलग-अलग शब्द हैं, दूरिया भी हैं इनमें, क्योंकि दूरिया न रही तो शब्द सार्थक नहीं हो पायेगा।

दूरी भी है तो पन्ने पर है, शब्द भी हैं तो पन्ने पर हैं,
कोई शब्द बड़ा तो कोई छोटा, कोई कभी नीली स्याही का,

तो कोई लाल या पीला।

पर जुड़े कैसे हैं ? पन्ने से ही तो।
शब्द अलग हो कर भी जुड़े हैं।

यदि पन्ना वर्षों तक बचा रहा तो शब्द भी बचेंगे, गल गया तो कुछ भी नहीं।

ये स्याही क्या है ?

ये पन्ना क्या है ?

ऊर्जा ही तो है!

इसी प्रकार, तुम, मैं, ये सारा ब्रम्हांड, हम सब शब्द हैं।

यह प्रकृति, ये जीव-जंतु, सब लिखे जा रहे हैं हमारे आयाम रुपी पन्ने पर।

कौन है वो जो लिख रहा है ?

ऊर्जा ही तो है !

- मोहित डोभाल

19 जनुअरी 2025

4:30 PM

4. काँच की बोतल

यूँ तो हर घर में मिल जाती है, पर आजकल प्लास्टिक के ज़माने में कभी-कभी नहीं भी मिलती।

अधिकतर लोग हल्की और लचीली बोतलों में रुचि लेने लगे हैं।

स्वाभाविक है, सब आगे बढ़ना चाहते हैं और पूर्व भार को ढोना नहीं चाहते।

चाहे वह भार पुरानी बातों का हो, पुराने रिश्तों का हो या पुरानी काँच की बोतलों का।

पर, एक वर्ग डटकर काँच की बोतलों को बचाए हुए है।

इन लोगों को पुरानी बातों का बोझ भी अच्छा लगता है और

अपनी काँच की बोतलों में भरी शराब के नशे में,

पुराने रिश्तों को श्रद्धांजलि देते हुए ढोने में भी इनको कोई शर्म नहीं आती।

कम से कम ये लोग प्लास्टिक जैसी खतरनाक बोतलों को वातावरण में तो नहीं छोड़ रहे हैं ।

हाँ ! पर नशे की चरम सीढ़ी पर से गिरते समय अपनी काँच की बोतल भी गिरा देते हैं।

और वो काँच न जाने कितने पैरों में कई दिनों तक चुभता रहता है।

कभी-कभी तो ये काँच के बारीक कण आसपास रहकर महीनों तक हाथ-पैर या शरीर में किसी न किसी को चुभते रहते हैं।

ये काँच के कण उन बातों की तरह हैं जो आपके अपने ही कभी-कभी हँसकर आपको चुभाने के लिए सुनाते रहते हैं।

काँच की बोतल जब तक बोतल है, तब तक ही ठीक है। जैसे ही टूटी वैसे ही संभालना मुश्किल।

ऐसा ही आपका दिल भी है।
'काँच का दिल'।
बातों के बाण अगर आपने सह लिए तो दिल बहुत काम का

और जैसे ही किसी बात को घर कर लिया तो इस काँच के दिल से बड़ा दुश्मन आपका कोई नहीं ।

वैसे तो दिल केवल धड़कता है।
वो तो कान हैं जो ज़हरीली बातों को सुनते हैं, वो तो मस्तिष्क है जो ज़हरीली बातों को घर कर लेता है।

वो तो आपकी भावनाएँ हैं जो बह उठती हैं।
पर इस काँच के दिल को कौन समझाए ?

काँच की बोतलों का जुगाड़ तो प्लास्टिक से किया जा सकता है ।

लेकिन, इस काँच के दिल के लिए, भला कौन सा प्लास्टिक लाओगे ?

- मोहित डोभाल

3 अक्टूबर 2023

11:33 PM

5. क्यों?

क्यों?
क्यों है ये प्रश्न तुम्हारे मन में 'क्यों' का ?

किसने डाला ये विचार तुम्हारे मन में कि पूछ सको इतनी सार्थकता के साथ ?

तुम स्वयं से भी, मित्र से भी , गुरु से भी, कैसे पूछ लेते हो 'क्यों'?

कैसे तुम्हारे नेत्र सूक्ष्म दृष्टिकोण को चूक जाते हैं?

कैसे तुम अपने अंदर के ज्ञान को भुला कर इतनी आसानी से कह देते हो 'क्यों' ?

क्या तुमने कभी अपने अर्जित किये ज्ञान को

टटोलकर स्वयं ही खोजने का प्रयास किया?

क्या कभी कलयुग के इन विद्युतीय उपकरणों को क्षण भर बंद कर के,

आत्मा और ब्रह्म के उपकरणों द्वारा स्वयं से पूछा 'क्यों'?

क्या कभी स्वयं से पूछा कि 'क्यों' हो तुम ?

तुम्हें ये तो पता है कि तुम क्या हो,
सबको बताते घूम रहे हो कि तुम क्या हो और कैसे हो।

परंतु स्वयं से कभी उत्तर ढूँढ पाए कि तुम हो तो हो 'क्यों' ?

- मोहित डोभाल

24 अक्टूबर 2025
3:21 PM

6. किरण

घन-घन उपवन में जूझती किरण
सोचती कैसे चीरूं इस पत्ती को,
किरण की आशा थी, चले जो पवन
चूम लूँ मैं भी इस गीली धरती को ।

न तो उसे सूरज ने दिशा दी थी
न ही कुछ कहा था उसकी बहनों को,
चल पड़ीं सब सीधी, चीरती धरती का गगन
देती नवजीवन फूलों की मस्ती को ।।

घनघोर जो कभी बादल छायें
और किरण से दूर कर दें बन को,
निडर बन फिर भी चलती जाये ये किरण
सिखा रही ढीठपन मेरे मन को ।।

घन-घन उपवन में जूझती किरण
सोचती कैसे चीरूं इस मेघ को,
किरण की आशा थी, चले जो पवन
चूम लूँ मैं भी इस गीली धरती को ।

- मोहित डोभाल

8 नवंबर 2024

8:30 AM

7. बस अभी

बस अभी करना है ! न अगले साल,

न परसों, न कल, बस अभी करना है !

आख़िर क्यों? इसलिए क्योंकि किसी ने

तुमसे कहा कि अभी कर के लाओ?

कौन हो तुम जिसे कहा जा रहा है ?
कौन है वो जिसने तुम्हें कहा ?
क्यों करना है अभी ?

अभी एक लंबी साँस तो ले लो।

एकबार आँख बंद कर के मन को शांत तो करो।

सोच के दायरे को आदेश देने वाले के परे तो करो ।

क्या दिखा?

दुनिया के विशाल होने की,

सोच के विशाल होने की,

संभावनाओं के महासागर की कुछ झलक दिखी?

यदि न दिखे तो, जो कहा गया है उसे बस अभी कर दो।

और यदि दिखे तो अपना वर्तमानिक कर्तव्य निभा,
उस नभ की उड़ान भर लो।

- मोहित डोभाल

5 अगस्त 2025
1:48 PM

8. आवश्यकता

आवश्यक होने को तो सब कुछ हो सकता है
परन्तु मन संभले जाये तो कुछ भी आवश्यक नहीं हो सकता।
आत्मा स्वतः निराकार है,
उसको तो आवश्यकताओं का बोझ ये शरीर
देता ही रहता है, वो भी बिना उससे पूछे।

'अति' यदि आवश्यकताओं की हो जाए,
तो, ये सुमधुर जीवन की धुन भी फीकी पड़ जाती है।
जीवन खुद ही जो इस आत्मा की देने है, भारी लगने लगता है।

आत्मा की खुशिओं का भार जितना बढ़ता है,
उतना ही जीवन हल्का हो जाता है।

जीवन हल्का हो जाए तो हमारे तेज की प्रगति होती है।
और ये तेज ही है जो हमारे साथ-साथ आस-पास के लोगों को भी
प्रज्वलित करता चलता है।

इसीलिए आवश्यक यही है कि हम अपना, दूसरे मनुष्यों का, एवं, सभी जीव जन्तुओं का जीवन मंगलमय बनाने का प्रयास करते रहें।

- मोहित डोभाल

26 अक्टूबर 2024
8:36 AM

9. खाली पेट

खाली पेट गाड़ी की खाली टंकी की तरह नहीं है
कि आपके देह की गाड़ी को बंद कर देगा।

पेट के सहायक बहुत हैं। कुछ दिन तक यदि
उसे पर्याप्त भोजन न भी मिले तो जमा की हुई
चरबी से काम चल ही जाता है।

पर क्या यह भूख आत्मा को भी होती है ?
खाने की न भी हो, तो किसी और चीज़ की ?
क्या उसे भी कुछ चाहिए जो उसे कई वर्षों से
न मिला हो?
क्या उसी भूख को मोक्ष कहते हैं ?

यह सब प्रश्न सुनने में बहुत उच्च कोटि के प्रतीत होते हैं।
शास्त्र भी यही ज्ञान देते हैं, कि मनुष्य
को ऐसे प्रश्नों का चिंतन करना चाहिए।

पर क्या पूर्णतः खाली पेट ऐसे विचारों को मन में पनपने देगा ? क्या कलयुग में ज्ञान की भूख की पूर्ण विजय पेट की भूख पर हो पायेगी ?

और क्या यह विजय आवश्यक है ?

- मोहित डोभाल

26 जुलाई 2025
8:55 AM

10. अनुभूति

प्रकृति के स्पर्श से अनुभूति कर ही
हमें आनंद की प्राप्ति होती है।
कभी शरीर के बाहर का स्पर्श
तो कभी आत्म-स्पर्श कर हम
इस माया से आभूषित जीवन का आनंद लेते हैं।

जिस व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य आनंद-प्राप्ति हो,
उसे यह भी पता होना चाहिए कि
आनंद-प्राप्ति भी प्रयत्न करने से होती है ।
और जब यह प्रयत्न हो रहा हो, तो वह समय आनंद के विपरीत ही होता है।

यदि जीवन में परिश्रम ही न हो तो,
आनंद की अनुभूति उसी प्रकार नहीं होती जैसे -
अँधेरे के अभाव में रौशनी का कोई महत्व नहीं होता ।

प्रकाश की अनुभूति से आनंद का कारक ही अंधकार है।

तभी तो जीवन का सार दुःख एवं आनंद का समागम है ।

- मोहित डोभाल

4 नवंबर 2024

4:00 PM

11. माथे का तिलक

सत्य है ! माथे का तिलक आकर्षित तो करता है।

दुनिया में लगता है, केवल भारतीय संस्कृति ही ऐसी है जिसमें माथे की महत्ता इस प्रकार है।

पूरी देह को नियंत्रित करने वाला ये मस्तिष्क, और उस मस्तिष्क की सहायता , इस दुनिया से अवगत कराने वाली आखों ने सदैव निस्वार्थ भाव से की है।

इन आखों के निस्वार्थ होने का कारण भी ये रौशनी है,
जो की स्वतः ही निस्वार्थ भाव से सूर्य से पृथ्वी पर छलांग लगाती है।

प्रकृति के इस निस्वार्थ भाव को, या कहें की प्रकृति के दिए गए अंधकार के भय को भाव रूप में दिखाने वाली ये दो भौएं, कुछ न कहते हुए भी कितना कुछ कह जाती हैं। गूंगे का भी भाव बता दें, ऐसी हैं ये भौएं।

जब ये तीनो अंग - मस्तिष्क, आखें और भौएं अपना-अपना कार्य इतनी सुंदरता एवं सूक्ष्मता के साथ कर ही रहे हैं तो तिलक की क्या आवश्यकता पड़ी ?

- मोहित डोभाल

29 अक्टूबर 2024

1:30 PM